नवरात्रि घटस्थापना पूजा

Youtube Video: https://www.youtube.com/watch?v=4-392xQGM4Y

नवरात्रि के शुभ महूर्त में घटस्थापना के माध्यम से माँ दुर्गा का अपने घर में आवाहन किया जाता है। घटस्थापना की पूरी प्रक्रिया नवरात्रि के पहले दिन की जाती है। एक बार घटस्थापना पूरी हो जाए, उसके बाद कलश को माँ का साक्षात स्वरूप माना जाता है। नवरात्रि के दूसरे दिन से अंतिम दिन तक, दैनिक पूजा, कलश को माँ दुर्गा का स्वरूप मानकर, उसी पर करनी चाहिए। तत्पश्चात, दसवें दिन कलश (घट) का विसर्जन कर दिया जाता है।

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

आवश्यक सामग्री

घटस्थापना की सामग्री (पहले दिन के लिए)

1. एक खुला और फैली हुई मिट्टी की प्लेट (ऊपर फोटो में देखें)। यदि मिट्टी की प्लेट ना मिले तो ताम्बे या पीतल की प्लेट का प्रयोग भी कर सकते हैं।
2. मिट्टी का कलश (जिसे घट भी कहते हैं) – ताम्बे या पीतल का कलश भी प्रयोग कर सकते हैं
3. मिट्टी की एक छोटी प्लेट - कलश के मुख को ढँकने के लिए। मिट्टी का दिया या ताम्बे/पीतल की छोटी प्लेट का प्रयोग भी किया जा सकता है।
4. स्वच्छ मिट्टी - यदि गंगा की मिट्टी मिल जाते तो अति उत्तम, नहीं तो किसी भी नदी की मिट्टी या कोई भी स्वच्छ मिट्टी का प्रयोग कर सकते हैं।
5. पंचधन्य बीज (पाँच भिन्न प्रकार के बीज) – यदि के ना उपलब्ध हो तो जौ का प्रयोग कर सकते हैं
    i. पूजा की दुकान में बने बनाये पंचधन्य बीज के पैकेट मिल जाते हैं
6. गंगा जल
7. कलावा (मौली)
8. अत्तर या खाने वाला कपूर
9. पंचपल्लव (पाँच पत्ते जो शरीर की पाँच वायु का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि ये उपलब्ध ना हो, तो आम या अशोक के 5 पत्तों का प्रयोग कर सकते हैं।
10. 1 कप अक्षत (अखंडित चावल)
11. 5 रत्न – यदि ये उपलब्ध ना हों, तो 5 सिक्कों का प्रयोग कर सकते हैं
12. हरा नारियल (पूर्वी भारत में प्रयोग किया जाने वाला) या शिखा वाला, बिना छिला नारियल
13. लाल सूती कपड़ा (नारियल को लपेटने के लिए) और यदि आप कलश को किसी पीढ़े पर स्थापित करेंगे, तो उस पर बिछाने के लिए भी लाल कपड़े का प्रयोग करें
14. फूल
15. दूब (दुर्वा) घास

दैनिक पूजा के लिए

1. चंदन का पेस्ट
2. अक्षत (अक्षत बनाकर रखने की प्रक्रिया नीचे देखें)
3. फूल
4. घी का दिया
5. अगरबत्ती और धूप
6. आचमन के लिए स्वच्छ पानी

अक्षत बनाने की विधि

थोड़ा अक्षत लें, और उसमें कुमकुम, हल्दी और थोड़ा सा घी डाल कर अच्छे से मिला लें। इस अक्षत का प्रयोग आप किसी भी सामग्री के उपलब्ध ना होने पर कर सकते हैं। जैसे फूल ना हो, तो उसकी जगह इस अक्षत का प्रयोग कर सकते हैं।

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

कलश की तैयारी

1. **मिट्टी की तैयारी:** फैली हुई मिट्टी की प्लेट, जिस के ऊपर आप कलश रखेंगे - उसकी तैयारी इस प्रकार तैयारी करें। अब हम इसमें पंचधन्य या जौ बोयेंगे। पहले प्लेट में एक परत मिट्टी फैलायें और उसमें बीजों को बराबर से फैला दें। बीजों को एकदम मध्य में ना रखें, बल्कि बराबर से फैला के डालें। अब मिट्टी की दूसरी परत फैलायें । दूसरी परत में बीजों को किनारे की तरफ़ फैलते हुए डालें। अब मिट्टी की तीसरी परत डालें। इसपर थोड़ा सा पानी छिड़क दें ताकि मिट्टी बैठ जाए। पानी ज़्यादा ना डालें नहीं तो कीचड़ में कलश ठीक से टिक नहीं पाएगा।
2. **कलश की तैयारी:** कलश के गले पर कलावा 9 बार बाँधें। कलश पर लाल सिंदूर से स्वस्तिक बनायें।
3. **पानी की तैयारी:** घट या कलश के अंदर पाँच रत्न डालें, और अगर ना हो तो 5 सिक्के डालें। अब कलश में गले से थोड़ा नीचे तक पानी भर दें। इसमें थोड़ा सा गंगाजल और अत्तर डालें ताकि पानी सुगन्धित हो जाए। यदि अत्तर ना हो तो लौंग या खाने वाला कपूर भी डाल सकते हैं।
4. **पञ्चपल्लव लगायें:** अब पञ्चपल्लव - जो शरीर की पाँच वायु के प्रत्येक हैं - उनकी तैयारी की जाएगी। यदि पञ्चपल्लव उपलब्ध ना हो, तो अशोक या आम के पत्तों का प्रयोग कर सकते हैं। हर पत्ते को अच्छे से धो लें, और उसके बाद उस पर एक टीका सिंदूर का लगायें। अब इन पत्तों को कलश की धुरी पर सावधानी से रखें। ध्यान रहे की पत्तियों की डंडी पानी में ना डूबे नहीं तो पानी खराब होने की संभावना रहती है।
5. **कलश को ढँक दें:** कलश को मिट्टी की प्लेट या दीपक से ढँक दें। इस प्लेट पर 1-2 मुट्ठी अक्षत रख दें । इतना अक्षत होना चाहिए की वो नारियल को स्थिर रखने में सहायता करे। यदि आपके पास दुर्वा (दूब) घास हो तो वो थोड़ी सी अक्षत पर रख दें।
6. **नारियल की तैयारी:** अब नारियल पर 5 जगह पर सिंदूर का टीका लगायें। इस पर लाल कपड़ा लपेट दें और माँ दुर्गा के किसी भी मंत्र को पढ़ते हुए लाल कलावे से बाँध दें। इसे कलश की सुरक्षा के लिए बाँधा जाता है। लाल कपड़ा नारियल के ऊपर रख भी सकते हैं।
7. **नारियल रखें**: अब नारियल को कलश के ढक्कन पर बनाये हुए अक्षत के बेस पर रख दें। नारियल की शिखा उपासक की तरफ़ होनी चाहिए। अक्षत के बेस पर मुद्रा के रूप में 1-2 सिक्के रख सकते हैं।

<u>वैकल्पिक:</u> कलश की सुरक्षा के लिए ये विधि की जा सकती है। थोड़ी सी मिट्टी कलश के आस पास चारों कोनों पर चौकोर आकृति में रखें। इस मिट्टी में एक-एक लकड़ी गाढ़ दें। फिर एक लाल धागा (कलावा) लेकर चारों लकड़ियों पर बाँधते हुए मुंडेर बनायें। इस प्रक्रिया से कलश सुरक्षित रहता है। यदि ये संभव ना हो तो इसे रहने दें। नारियल पर जो धागा बाँधा था, वो कलश की सुरक्षा करेगा।

ध्यान रहे की कलश का पूरी स्थापना स्थिर हो और अपने आप बिना किसी सहायता के खड़ी रहे। कलश मिट्टी में थोड़ा सा गाढ़ दें और नारियल अक्षत में थोड़ा सा गढ़ा रहे।

ये भी ध्यान रहे कि जो जौ या पंचधन्य मिट्टी में बोए हैं, वो जब अंकुरित होंगे तो कलश उससे हिले नहीं। दैनिक पूजा के समय मिटी में थोड़ा सा पानी छिड़कें पर ध्यान रहे की मिट्टी बहुत गीली ना हो अन्यथा उस पर फंगस लगने की संभावना है।

कलश पर थोड़े से फूल चढ़ायें

अब हम कलश की पूजा के लिए तैयार हैं।

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

घटस्थापना विधि (पहले दिन के लिए)

इस भाग में हम माँ दुर्गा का कलश में आवाहन करने की प्रक्रिया बता रहे हैं। **इस भाग के सभी चरण नवरात्र के पहले दिन ही किए जाएँगे।**

समय: घटस्थापना का आदर्श समय घटस्थापना महूर्त होता है (कृपया दृक्पंचांग पर अपने निवास स्थान के अनुरूप महूर्त देख लें)। यदि किसी कारणवश घटस्थापना महूर्त में पूजा करना संभव नहीं है, तो प्रतिपदा तिथि के भीतर किसी भी समय सूर्य ढलने से पहले स्थापना कर लें। **घटस्थापना सूर्यास्त के बाद नहीं की जाती है**

पूजा विधि

1. कलश की स्थापना के लिए एक स्वच्छ जगह चुनें। कलश स्थापित होने के बाद नवरात्रि के सभी दिनों तक वहीं रहेगा तो इस बात का संज्ञान रखते हुए उचित जगह ढूँढें। कलश रखने से पहले उस स्थान पर एक छोटी सी रंगोली या कोल्लम बना सकते हैं। कलश को किसी पीढ़े पर लाल कपड़ा बिछा के भी रख सकते हैं।
2. दीपक और अगरबत्ती जलायें।
3. यदि अखंड दिया रखना संभव हो तो तेल या घी का अखंड दिया भी रख सकते हैं। अखंड दिया इस पूजा में बहुत फलदायी होता है। यदि आप अखंड दिया रखने में पारंगत हैं तो अखंड दिया का उल्लेख संकल्प में भी किया जा सकता है।
4. गणपति जी से प्रार्थना करें की वो आपकी पूजा को निर्विघ्न करें और आपकी पूजा की सफलता में आपकी सहायता करें।
5. सभी देवताओं और प्रधान देवता (माँ दुर्गा) का ध्यान करें और प्रार्थना करें की वो सभी इस कलश को आशीर्वाद दें और वाहन उपस्थित हों।
6. अब, निम्नलिखित प्रत्येक मंत्र के साथ, **एक फूल या एक चुटकी सिंदूर या अक्षत** को घट पर डालें। बस एक चुटकी सिंदूर या पुष्प, प्रत्येक देवता के लिए पर्याप्त है ।

ॐ श्री महागणाधिपतये नमः	oṁ śrī mahāgaṇādhipataye namaḥ
ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः	oṁ lakṣmī-nārāyaṇābhyāṃ namaḥ
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः	oṁ umāmaheśvarābhyāṃ namaḥ
ॐ वाणिहिरण्यगर्भाभ्यां नमः	oṁ vāṇi-hiraṇyagarbhābhyāṃ namaḥ
ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः	oṁ śacī-purandarābhyāṃ namaḥ
ॐ मातापितृभ्यां नमः	oṁ mātāpitṛbhyāṃ namaḥ
ॐ इष्टदेवेभ्यो नमः	oṁ iṣṭadevebhyo namaḥ
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः	oṁ kuladevatābhyo namaḥ
ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः	oṁ grāmadevatābhyo namaḥ
ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः	oṁ vāstudevatābhyo namaḥ

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः	oṁ sthānadevatābhyo namaḥ
ॐ गृहदेवताभ्यो नमः	oṁ gṛhadevatābhyo namaḥ
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः	oṁ sarvebhyo devebhyo namaḥ
ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः	oṁ sarvebhyo brāhmaṇebhyo namaḥ
ॐ भूः	oṃ bhūḥ
ॐ भुवः	oṃ bhuvaḥ
ॐ स्वः	oṃ svaḥ
ॐ महः	oṃ mahaḥ
ॐ जनः	oṃ janaḥ
ॐ तपः	oṃ tapaḥ
ॐ सत्यम्	oṃ satyam
निम्नलिखित मंत्रों के साथ, फूल की पंखुड़ी को थोड़े से चंदन से छुआ के समर्पित करें	
एते गन्धपुष्पे ॐ गं गणपतये नमः	ete gandhapuṣpe oṃ gaṃ gaṇapataye namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ आदित्यादि नवग्रहेभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe oṃ ādityādi navagrahebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ शिवादि पञ्चदेवताभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe oṃ śivādi pañcadevatābhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe oṃ indrādi daśadikpālebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ मत्स्यादि दशावतारेभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe oṃ matsyādi daśāvatārebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ प्रजापतये नमः	ete gandhapuṣpe oṃ prajāpataye namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ नमो नारायणाय नमः	ete gandhapuṣpe oṃ namo nārāyaṇāya namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe oṃ sarvebhyo devebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ सर्वेभ्यो देवीभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe oṃ sarvebhyo devībhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ श्रीगुरवे नमः	ete gandhapuṣpe oṃ śrīgurave namaḥ

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

हाथ जोड़ कर कहें	
ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥	oṃ tadviṣṇoḥ paramaṃ padam sadā paśyanti sūrayaḥ divīva cakṣurātatam
थोड़ा सा आचमन पत्र का पानी, एक फूल के साथ निम्न मंत्र के साथ, चारों ओर फैलते हुए समर्पित करें	
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥	oṃ apavitraḥ pavitro vā sarvāvasthāṃ gato'pi vā yaḥ smaret puṇḍarīkākṣaṃ sa bāhyābhyantaraḥ śuciḥ

7. संकल्प लें की कलश या घट को नवरात्रि के सभी 9 दिनों तक रखेंगे और माँ दुर्गा की प्रत्येक दिन पूजा करेंगे
   a. इस संकल्प में यदि आप अखंड दिया रख रहें हैं तो उसका उल्लेख कर सकते हैं।
   b. संकल्प लेने के बाद चाहें तो माँ दुर्गा की कोई भी स्तुति जो आपको याद हो वो पढ़ सकते हैं - जैसे दुर्गा चालीसा, दुर्गा द्वात्रिंशनामावलि या कोई भी दुर्गा मंत्र (जिसका आपको उपदेश प्राप्त हो)

8. अब महागणपति के आवाहन के इस श्लोक का उच्चारण करें और अपनी पूजा को निर्विघ्न करने की प्रार्थना करें। एक फूल या अक्षत समर्पित करें।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥	vakratuṇḍa mahākāya sūryakoṭi samaprabha | nirvighnaṃ kuru me deva sarvakāryeṣu sarvadā ||

9. अब स्वस्ति वचन का उच्चारण करें:

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायूः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥	oṃ bhadraṃ karṇebhiḥ śṛṇuyāma devāḥ। bhadraṃ paśyemākṣabhiryajatrāḥ। sthirairaṅgaistuṣṭuvāgaṃsas tanūbhiḥ। vyaśema devahitaṃ yadāyuḥ। svasti na indro vṛddhaśravāḥ svasti naḥ pūṣā viśvavedāḥ। svasti nastārkṣyo ariṣṭanemiḥ svasti no bṛhaspatir dadhātu॥ oṃ śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ॥

10. अब निम्नलिखित प्रत्येक मंत्र के साथ सिंदूर या फूल चढ़ायें

ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणी हुं फट् स्वाहा	oṃ durge durge rakṣiṇi huṃ phaṭ svāhā
ॐ ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् । ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः ॥	oṃ ṛtaṃ satyaṃ paraṃ brahma puruṣaṃ kṛṣṇapiṅgalam, ūrdhvaretaṃ virūpākṣaṃ viśvarūpāya vai namo namaḥ.

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

एते गन्धपुष्पे ॐ ब्रह्मणे नमः	ete gandhapuṣpe oṁ brahmane namaḥ
एते गन्धपुष्पे ब्राह्मणेभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe brāhmaṇebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ आचार्येभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe oṁ ācāryebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे ऋषिभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe ṛṣibhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे देवेभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe devebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे वेदेभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe vedebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे तन्त्रेभ्यो नमः	ete gandhapuṣpe tantrebhyo namaḥ
एते गन्धपुष्पे वायवे नमः	ete gandhapuṣpe vāyave namaḥ
एते गन्धपुष्पे मृत्यवे नमः	ete gandhapuṣpe mṛtyave namaḥ
एते गन्धपुष्पे विष्णवे नमः	ete gandhapuṣpe viṣṇave namaḥ
एते गन्धपुष्पे वैश्रवणाय नमः	ete gandhapuṣpe vaiśravaṇāya namaḥ
एते गन्धपुष्पे उपजाय नमः	ete gandhapuṣpe upajāya namaḥ
एते गन्धपुष्पे ॐ कौम् कुमार्यै नमः	ete gandhapuṣpe oṁ kaum kumāryai namaḥ

अब ध्यान करें कि माँ दुर्गा इस कलश में स्थापित हो गई हैं

दैनिक पूजा की प्रक्रिया

इस भाग में नवरात्रि के सभी दिनों की जाने वाली दैनिक पूजा का उल्लेख किया जा रहा है। इस पूजा जो घटस्थापना के बाद पहले दिन भी किया जाएगा और अंतिम दिन विसर्जन से पहले किया जाएगा। इस प्रक्रिया में, ध्यान और जाप के अलावा लगभग 40 मिनट लगेंगे। जब इस सम्पूर्ण विधि को विधिवत किया जाता है, जिसमें सभी देवताओं का आवाहन दैनिक रूप से होता है और उन्हें तृप्त किया जाता है, तो पूजा का प्रभाव बहुत उच्चकोटि का होता है।

सूचना: यदि आपके पास इतने पुष्प ना हो, तो अक्षत का प्रयोग कर सकते हैं।

सूचना: यदि समय ना होने के कारण ये पूरी पूजा करना संभव ना हो तो आप **माँ दुर्गा का ध्यान मंत्र, माँ दुर्गा की पंचोपचार पूजा, जाप और श्लोक पर ध्यान करके, समर्पण करके** छोटी पूजा कर सकते हैं।

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

दैनिक पूजा विधि

1. पहले **माँ दुर्गा के ध्यान मंत्र का उच्चारण करें और इसपे ध्यान करें**

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्। हस्तैश्चक्रदरालिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥	vidyuddāmasamaprabhāṁ mṛgapatiskaṁdhasthitāṁ bhīṣaṇāṁ kanyābhiḥ karavālakhēṭavikasaddhastābhirāsēvitām | hastaishcakradarālikhēṭaviśikhāṁścāpaṁ guṇaṁ tarjanīṁ bibhrāṇāmanalātmikāṁ śaśidharāṁ durgāṁ trinetrāṁ bhajē ||

याचण्डी मधुकैटभादिदलनी यामाहिषोन्मूलिनी याधूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथनी यारक्तबीजाशनी । शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी यासिद्धिदात्री परा सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥	yā caṇḍī madhukaiṭabhādidalanī yā māhiṣōnmūlinī yā dhūmrēkṣaṇacaṇḍamuṇḍamathanī yā raktabījāśanī | śaktiḥ śumbhaniśumbhadaityadalanī yā siddhidātrī parā sā dēvī navakōṭimūrtisahitā māṁ pātu viśvēśvarī |

2. अब कलश पर **माँ दुर्गा** को **पंचोपचार पूजा** समर्पित करें – इसमें सिंदूर, अक्षत, फूल, धूप, दीपक और भोग चढ़ाया जाता है। भोग में कोई भी मिष्ठान, गन्ने का रस या कुछ भी चढ़ा सकते हैं ।

Step	Meaning	Mantra
गन्धम्	चंदन का पेस्ट चढ़ायें	ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः गन्धम् समर्पयामि। (oṁ hrīṁ durgāyai namaḥ gandham samarpayāmi)
पुष्पम्	फूल चढ़ायें	ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः पुष्पं समर्पयामि। (oṁ hrīṁ durgāyai namaḥ puṣpaṁ samarpayāmi)
धूपम्	धूप चढ़ायें	ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः धूपं समर्पयामि। (oṁ hrīṁ durgāyai namaḥ dhūpaṁ samarpayāmi)
दीपम्	दीपक दिखायें	ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः दीपं समर्पयामि। (oṁ hrīṁ durgāyai namaḥ dīpaṁ samarpayāmi)
नैवेद्यम्	भोग चढ़ायें	ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः नैवेद्यं समर्पयामि। (oṁ hrīṁ durgāyai namaḥ naivedyaṁ

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

		samarpayāmi)
ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः सर्वोपचारान् समर्पयामि ॥ oṁ hrīṁ durgāyai namaḥ sarvopacārān samarpayāmi ॥		

सूचना: निम्नलिखित न्यास, भूत-शुद्धि और भूतापसरण के साथ कुछ क्रियायें की जाती हैं। यदि आपको इनका ज्ञान नहीं है तो साधारण रूप से दिए हुए मंत्र पढ़ लें

3. अब माँ दुर्गा के लिए करन्यास और अंगन्यास करें। यदि आपको न्यास करना नहीं आता, तो बस मंत्रों का उच्चारण कर लें।

करन्यास

ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यांनमः ॐ ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्याम् नमः ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः	oṁ hrāṁ aṅguṣṭhābhyāṁ namaḥ oṁ hrīṁ tarjanībhyāṁ namaḥ oṁ hrūṁ madhyamābhyāṁ namaḥ oṁ hraiṁ anāmikābhyāṁ namaḥ oṁ hrauṁ kaniṣṭhikābhyāṁ namaḥ oṁ hraḥ karatala-karapṛṣṭhābhyām namaḥ oṁ hrīṁ śrīṁ duṁ durgāyai namaḥ

अंगन्यास

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॐ ह्रैं कवचाय हुं ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः	oṁ hrāṁ hṛdayāya namaḥ oṁ hrīṁ śirase svāhā oṁ hrūṁ śikhāyai vaṣaṭ oṁ hraiṁ kavacāya huṁ oṁ hrauṁ netratrayāya vauṣaṭ oṁ hraḥ astrāya phaṭ oṁ hrīṁ śrīṁ duṁ durgāyai namaḥ

4. **भूत-शुद्धि**

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ लं वं रं यं हं ॐ । ॐ हं यं रं वं लं ॐ ॥ ॐ मूलशृङ्गात् शिरसि सुषुम्णापथेन जीवशिवं परमशिवपदे योजयामि स्वाहा ॥ ॐ यं लिङ्गशरीरं शोषय शोषय स्वाहा ॥ ॐ रं संकोचशरीरं दह दह स्वाहा ॥ ॐ परमशिव सुषुम्णापथेन मूलशृङ्गात् मूलोल्लास ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सोऽहं हंसः स्वाहा ॥	oṃ laṃ vaṃ raṃ yaṃ haṃ oṃ oṃ haṃ yaṃ raṃ vaṃ laṃ oṃ oṃ mūlaśṛṅgāt śirasi suṣumṇā-pathena jīva-śivaṃ parama-śiva-pade yojayāmi svāhā oṃ yaṃ liṅga-śarīraṃ śoṣaya śoṣaya svāhā oṃ raṃ saṃkoca-śarīraṃ daha daha svāhā oṃ parama-śiva suṣumṇā-pathena mūlaśṛṅgāt mūlollāsa jvala jvala prajvala prajvala so'haṃ haṃsaḥ svāhā

5. **भूतापसरण**

ॐ अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भुवि संस्थिताः । ये भूताः विघ्नकर्तारस् ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ ॐ वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः । अपसर्पन्तु ते सर्वे नरसिंहेन ताडिताः ॥	oṃ apasarpaṇtu te bhūtā ye bhūtā bhuvi saṃsthitāḥ | ye bhūtā vighna-kartāras te naśyantu śivājñayā || oṃ vetālāś ca piśācāś ca rākṣasāś ca sarīsṛpāḥ | apasarpaṇtu te sarve narasiṃhena tāḍitāḥ ||

6. दीपक पर एक पुष्प चढ़ायें और कहें:

ॐ अग्नये नमः ॐ त्वां दुर्गे नमामि	oṃ agnaye namaḥ oṃ tvāṃ durge namāmi

7. निम्नलिखित प्रत्येक मंत्र के साथ एक फूल या सिंदूर या अक्षत चढ़ायें:

ॐ नमः शिवाय	oṁ namaḥ śivāya
ॐ नारायणाय नमः	oṁ nārāyaṇāya namaḥ
ॐ दुर्गा देव्यै नमः	oṁ durgā devyai namaḥ
ॐ सूर्यदेवाय नमः	oṁ sūryadevāya namaḥ
ॐ गणपतये नमः	oṁ gaṇapataye namaḥ
ॐ भैरवाय नमः	oṁ bhairavāya Namaḥ

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ गुरुभ्यो नमः (३ वारं)	oṁ gurubhyo namaḥ (3 times)
ॐ योगिनीभ्यो नमः	oṁ yoginībhyo namaḥ
ॐ क्षेत्रपालाय नमः	oṁ kṣetrapālāya amaḥ
ॐ वटुकाय नमः	oṁ vaṭukāya namaḥ
ॐ गणपतये नमः	oṁ gaṇapataye namaḥ
नवदुर्गा	
ॐ शैलपुत्र्यै नमः	oṁ śailaputryai namaḥ
ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः	oṁ brahmacāriṇyai namaḥ
ॐ चन्द्रघण्टायै नमः	oṁ candraghaṇṭāyai namaḥ
ॐ कूष्माण्डायै नमः	oṁ kūṣmāṇḍāyai namaḥ
ॐ स्कन्दमातायै नमः	oṁ skandamātāyai namaḥ
ॐ कात्यायन्यै नमः	oṁ kātyāyanyai namaḥ
ॐ कालरात्र्यै नमः	oṁ kālarātryai namaḥ
ॐ महागौर्यै नमः	oṁ mahāgauryai namaḥ
ॐ सिद्धिदात्र्यै नमः	oṁ siddhidātryai namaḥ
नवग्रह	
ॐ सूर्याय नमः	oṁ sūryāya namaḥ
ॐ चन्द्राय नमः	oṁ candrāya namaḥ
ॐ मङ्गलाय नमः	oṁ maṅgalāya namaḥ
ॐ बुधाय नमः	oṁ budhāya namaḥ
ॐ बृहस्पतये नमः	oṁ bṛhaspataye namaḥ
ॐ शुक्राय नमः	oṁ śukrāya namaḥ
ॐ शनैश्चराय नमः	oṁ śanaiścarāya namaḥ
ॐ राहवे नमः	oṁ rāhave namaḥ

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ केतवे नमः	oṁ ketave namaḥ
अष्टमातृका	
ॐ ब्राह्म्यै नमः	oṁ brāhmyai namaḥ
ॐ वैष्णव्यै नमः	oṁ vaiṣṇavyai namaḥ
ॐ माहेश्वर्यै नमः	oṁ māheśvaryai namaḥ
ॐ इन्द्राण्यै नमः	oṁ indrāṇyai namaḥ
ॐ कौमार्यै नमः	oṁ kaumāryai namaḥ
ॐ वाराह्यै नमः	oṁ vārāhyai namaḥ
ॐ चामुण्डायै नमः	oṁ cāmuṇḍāyai namaḥ
ॐ नारसिंह्यै नमः	oṁ nārasiṁhyai namaḥ
अष्टभैरव	
ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः	oṁ asitāṅgabhairavāya namaḥ
ॐ रुरुभैरवाय नमः	oṁ rurubhairavāya namaḥ
ॐ चण्डभैरवाय नमः	oṁ caṇḍabhairavāya namaḥ
ॐ क्रोधभैरवाय नमः	oṁ krodhabhairavāya namaḥ
ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः	oṁ unmattabhairavāya namaḥ
ॐ कपालभैरवाय नमः	oṁ kapālabhairavāya namaḥ
ॐ भीषणभैरवाय नमः	oṁ bhīṣaṇabhairavāya namaḥ
ॐ संहारभैरवाय नमः	oṁ saṁhārabhairavāya namaḥ
ॐ वटुकाय नमः	oṁ vaṭukāya namaḥ
महाविद्या	
ॐ कालिके नमः	oṁ kālike namaḥ

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ तारायै नमः	oṁ tārāyai namaḥ
ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः	oṁ tripurasundaryai namaḥ
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः	oṁ bhuvaneśvaryai namaḥ
ॐ छिन्नमस्तायै नमः	oṁ chinnamastāyai namaḥ
ॐ भैरव्यै नमः	oṁ bhairavyai namaḥ
ॐ धूमावत्यै नमः	oṁ dhūmavatyai namaḥ
ॐ बगलामुख्यै नमः	oṁ bagalāmukhyai namaḥ
ॐ मातङ्ग्यै नमः	oṁ mātaṅgyai namaḥ
ॐ कमलायै नमः	oṁ kamalāyai namaḥ
ॐ धर्माय नमः	oṁ dharmāya namaḥ
ॐ कामाय नमः	oṁ kāmāya namaḥ
ॐ अर्थाय नमः	oṁ arthāya namaḥ
ॐ मोक्षाय नमः	oṁ mokṣāya namaḥ
ॐ उग्रचण्डायै नमः	oṁ ugracaṇḍāyai namaḥ
ॐ प्रचण्डायै नमः	oṁ pracaṇḍāyai namaḥ
ॐ चण्डोग्रायै नमः	oṁ caṇḍogrāyai namaḥ
ॐ चण्डवत्यै नमः	oṁ caṇḍavatyai namaḥ
ॐ चण्डरूप्यै नमः	oṁ caṇḍarūpyai namaḥ
ॐ अति चण्डिकायै नमः	oṁ ati caṇḍikāyai namaḥ
ॐ महाकाल्यै नमः	oṁ mahākālyai namaḥ
ॐ महालक्ष्म्यै नमः	oṁ mahālakṣmyai namaḥ
ॐ महासरस्वत्यै नमः	oṁ mahāsarasvatyai namaḥ
ॐ सिंहाय नमः	oṁ siṁhāya namaḥ

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ शिवाय नमः	oṁ śivāya namaḥ
ॐ आत्मने नमः	oṁ ātmane namaḥ
ॐ परमात्मने नमः	oṁ paramātmane namaḥ
ॐ गुरुभ्यो नमः (३ वारं)	oṁ gurubhyo namaḥ (3 times)
ॐ ऋषिभ्यो नमः	oṁ ṛṣibhyo namaḥ
ॐ ऋषिपत्निभ्यो नमः	oṁ ṛṣipatnibhyo namaḥ
ॐ सकल आवरण देवताभ्यो नमः	oṁ sakala āvaraṇa devatābhyo namaḥ
ॐ गृहदेवताभ्यो नमः	oṁ gṛhadevatābhyo namaḥ
ॐ कुल देवतायै नमः	oṁ kula devatāyai namaḥ

8. कपूर की आरती के साथ पूजा संपन्न करें और मानसिक प्रदक्षिणा करें ।
9. जिस भी दुर्गा मंत्र या स्तोत्र का संकल्प लिया था उसके निर्धारित संख्या का जाप को पूरा करें ।
10. निर्धारित संख्या का जाप करने के बाद, निम्न श्लोक पर 5-10 मिनट तक ध्यान करें। क्षमतानुसार अधिक ध्यान भी कर सकते हैं।

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥	śaraṇāgatadīnārta-paritrāṇa-parāyaṇe । sarvasyārtihare devi nārāyaṇi namo 'stu te ॥

11. पूजा संपन्न करने के लिए इस समर्पण मंत्र को दाहिने हाथ से पानी छोड़ते हुए कहें:

गुह्यति गुह्य गोप्त्रि त्वम् गृहाणस्मत्कृतं जपम् सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादन्मयि स्थिरा ॥	guhyati guhya goptri tvam gṛhāṇasmatkṛtaṃ japam siddhir bhavatu me devi tvatprasādān mayi sthirā

घट विसर्जन प्रक्रिया (अंतिम दिन)

1. दैनिक प्रक्रिया की तरह पंचोपचार पूजा करें
2. मानसिक रूप में माँ दुर्गा को आभार प्रकट करें की उन्होंने आपके साथ नवरात्रि बितायी। यदि अंतिम दिन आप कुछ समर्पित करना चाहते हो - जैसे वस्त्र, मिठाई, दक्षिण, आभूषण, श्रृंगार इत्यादि तो वो चढ़ायें।
3. माँ से क्षमा-प्रार्थना करें:

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥1॥	aparādha-sahasrāṇi kriyante'harniśaṁ mayā dāso'yamiti māṁ matvā kṣamasva parameśvari ॥1॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥2॥	āvāhanaṁ na jānāmi na jānāmi visarjanam pūjāṁ caiva na jānāmi kṣamyatāṁ parameśvari ॥2॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि । यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥3॥	mantra-hīnaṁ kriyā-hīnaṁ bhakti-hīnaṁ sureśvari yat pūjitaṁ mayā devi paripūrṇaṁ tad astu me ॥3॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् । यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥4॥	aparādha-śataṁ kṛtvā jagad-ambeti coccaret yāṁ gatiṁ samavāpnoti na tāṁ brahmādayaḥ surāḥ ॥4॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके । इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥5॥	sāparādho'smi śaraṇaṁ prāptas tvāṁ jagad ambike idānīm anukampyo'haṁ yathecchasi tathā kuru ॥5॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥6॥	ajñānād vismṛter bhāntyā yan nyūnam adhikaṁ kṛtam tat sarvaṁ kṣamyatāṁ devi prasīda parameśvari ॥6॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे । गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥7॥	kāmeśvari jagan-mātaḥ saccidānanda-vigrahe gṛhāṇārcām imāṁ prītyā prasīda parameśvari ॥7॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥8॥	guhyāti-guhya-goptrī tvaṁ gṛhāṇāsmat-kṛtaṁ japam siddhir bhavatu me devi tvat-prasādāt sureśvari ॥8॥

4. पूजा और जाप पूरा होने के बाद, पहले ऊपर से नारियल हटायें। इस नारियल का लाल कपड़े के साथ बहते पानी में विसर्जन किया जा सकता है।.
5. जो अक्षत नारियल के नीचे रखा था, उसमें से मुद्रा हटा लें, और अक्षत को चिड़ियों के खाने के लिए कहीं बाहर रख दें।
6. पञ्चपल्लव या अशोक/आम की पत्तियों को निकल लें और उन्हें कलश के पानी में डुबो को घर भर में छिड़काव करें। पानी थोड़ा सा प्रसाद के रूप में ग्रहण भी कर सकते हैं।
7. कलश के नीचे के थाल में, जो पौधे उग आए हैं, उनका भी बहते पानी में विसर्जन कर दें। यदि बहता पानी नहीं हो, तो किसी साफ़ पेड़ के नीचे रख सकते हैं।
8. पानी में जो रत्न या सिक्के रखें थे, उन्हें थोड़े से अक्षत के साथ एक लाल कपड़े में बाँध कर अलमारी या पूजा में रखें। इन रत्नों में माँ का आशीर्वाद है और ये संपन्नता देते हैं।
9. कोई भी वस्त्र, श्रृंगार या मुद्रा जो आपने चढ़ायी हो, उसका दान कर दें।
10. कन्या पूजन कर के नवरात्रि की पूजा का समापन किया जाता है। राजर्षि नंदी जी के इस वीडियो में कन्या पूजन का प्रावधान व प्रक्रिया बतायी गई है ▶ Powerful Navaratri Sadhana | Durga Puja | Rajarshi Nandy
    a. यदि कन्या पूजन संभव नहीं है, तो दान का समान किसी ब्राह्मण जो किसी दुर्गा या देवी मंदिर में सेवा करते हों, उन्हें दिया जा सकता है।
    b. यदि कन्या पूजा संभव ना हो, तो सारी और श्रृंगार माँ के मंदिर में जाके दान कर दें।

[प्रकाशन तिथि: मार्च 17, 2026]

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation